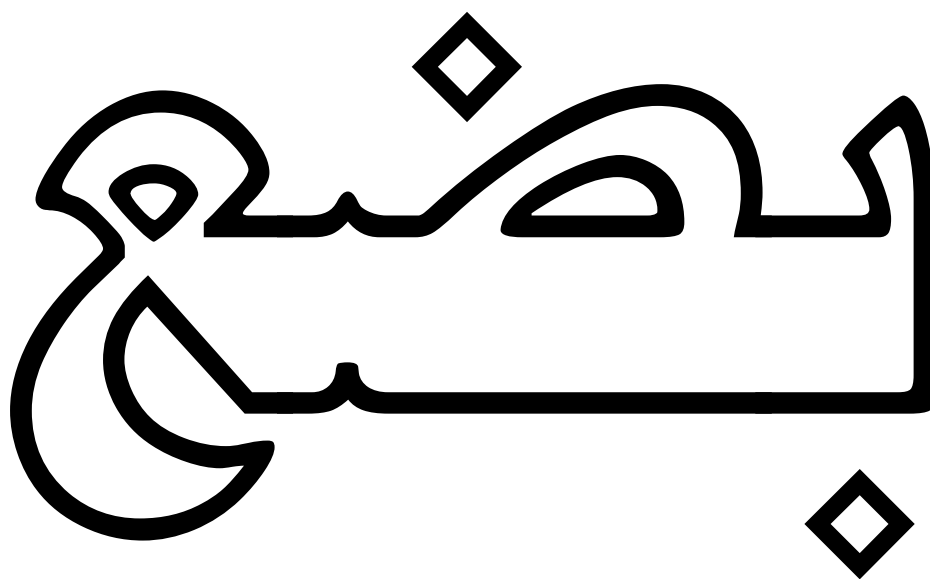




نظام مفهومی قرآن کریم

ریشه‌ی ۱۷۵



هو الحکیم

برای دستیابی به نقشه‌ی علم، نیاز به نقشه‌ی مفاهیمی داریم که در شکل‌گیری حوزه‌های علمی مورد استفاده قرار می‌گیرد. برای به دست آوردن نقشه‌ی مفاهیم نیز می‌توان از نقشه‌ی ریشه‌های مفاهیم آغاز کرد. در تدوین نقشه‌ی علم مورد نظر ما که زیربنا و شالوده‌ی آن، قرآنی است، ابتدا به نقشه‌ی مفاهیم قرآنی نیاز داریم که برای رسیدن به آن، نخست از نقشه‌ی ریشه‌های قرآنی آغاز می‌کنیم. در این نقشه، ریشه‌ی لغوی مفاهیم قرآنی و روابط آنها به تصویر کشیده می‌شود. قرآن کریم دارای ۱۹۱۹ ریشه می‌باشد که مجموعه‌ی ۱۶۰۹۰ کلمه‌ی مختلف (با در نظر گرفتن اعراب) از آنها مشتق شده است.

در نقشه‌ی ریشه‌های مفاهیم قرآن کریم، برای هر ریشه یک گره در نظر گرفته شده است. مطابق تعریف، دو ریشه با یکدیگر ارتباط دارند، هرگاه یکی از مشتقات آنها در یک آیه همزمان ظاهر شده باشند (هموقوعی). هرچه هموقوعی دو ریشه با یکدیگر بیشتر باشد، یعنی ارتباط آنها قوی‌تر است و در نتیجه ضخامت یال رسم شده بین آن دو ریشه، بیشتر خواهد بود.

در این سند، اطلاعات مربوط به ریشه‌ی شماره‌ی ۱۷۵، «بضع» ثبت شده است. این اطلاعات شامل فهرست مشتقات و تعداد تکرار آنها، فهرست ریشه‌های مرتبط با تعداد هموقوعی و فهرست آیات مرتبط به آن ریشه می‌باشد. همچنین دو نمودار در پیوست این سند وجود دارد که یکی نمودار نقشه‌ی ریشه‌ی «بضع» و یکی نمودار نقشه‌ی مشتقات ریشه‌ی «بضع» می‌باشد.^۱ امید است که این مجموعه و مستندات دیگر آن بتواند زمینه‌ی لازم برای تولید علم قرآن محور را فراهم نماید.

مرکز مطالعات سیستم‌های ترنس‌فیزیکی

شهریورماه ۱۳۸۹

رمضان المبارک ۱۴۳۱

^۱ این اطلاعات از نرم‌افزار «نور الانوار» محصول مرکز تحقیقات علوم کامپیوتری نور، استخراج شده است، که بدین‌وسیله از همکاری آن مرکز برای در اختیار گذاشتن پایگاه داده‌ی ریشه‌ها و کلمات سپاسگزاری می‌شود.

مشخصات

شماره	۱۷۵
ریشه	بضع
تعداد تکرار	۷
تعداد مشتقات	۶
تعداد ریشه مرتبط	۶۲

فهرست مشتقات

۱. بِيضَاعَةٌ (۱) ۲. بِيضَاعَةٌ (۱) ۳. بِيضَاعَتُهُمْ (۲) ۴. بِيضَاعَتُنَا (۱) ۵. بِيضَعٌ (۱) ۶. بِيضِعٌ (۱)

فهرست ریشه‌های مرتبط

- | | | | | | | | | | | | | | |
|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|
| ۱. ابو (۲) | ۲. بع (۲) | ۳. بع (۲) | ۴. بع (۲) | ۵. بع (۲) | ۶. بع (۲) | ۷. بع (۲) | ۸. بع (۲) | ۹. بع (۲) | ۱۰. بع (۲) | ۱۱. بع (۲) | ۱۲. بع (۲) | | |
| ۲. اخو (۲) | ۱۴. بغي (۲) | ۲۷. زوج (۱) | ۲۸. زيد (۲) | ۲۹. سجن (۱) | ۳۰. سرر (۱) | ۳۱. سنو (۲) | ۳۲. سير (۱) | ۳۳. شطن (۱) | ۳۴. صدق (۲) | ۳۵. ضرر (۱) | ۳۶. ظنن (۱) | ۳۷. عرف (۱) | ۳۸. عزز (۱) |
| ۳. الله (۳) | ۱۵. جزی (۱) | ۲۸. زيد (۲) | ۲۹. سجن (۱) | ۳۰. سرر (۱) | ۳۱. سنو (۲) | ۳۲. سير (۱) | ۳۳. شطن (۱) | ۳۴. صدق (۲) | ۳۵. ضرر (۱) | ۳۶. ظنن (۱) | ۳۷. عرف (۱) | ۳۸. عزز (۱) | ۳۹. علم (۱) |
| ۴. اله (۳) | ۱۶. جعل (۱) | ۲۹. سجن (۱) | ۳۰. سرر (۱) | ۳۱. سنو (۲) | ۳۲. سير (۱) | ۳۳. شطن (۱) | ۳۴. صدق (۲) | ۳۵. ضرر (۱) | ۳۶. ظنن (۱) | ۳۷. عرف (۱) | ۳۸. عزز (۱) | ۳۹. علم (۱) | ۴۰. عمل (۱) |
| ۵. امر (۱) | ۱۷. جیء (۲) | ۳۰. سرر (۱) | ۳۱. سنو (۲) | ۳۲. سير (۱) | ۳۳. شطن (۱) | ۳۴. صدق (۲) | ۳۵. ضرر (۱) | ۳۶. ظنن (۱) | ۳۷. عرف (۱) | ۳۸. عزز (۱) | ۳۹. علم (۱) | ۴۰. عمل (۱) | ۴۱. غلم (۱) |
| ۶. امن (۱) | ۱۸. حفظ (۲) | ۳۱. سنو (۲) | ۳۲. سير (۱) | ۳۳. شطن (۱) | ۳۴. صدق (۲) | ۳۵. ضرر (۱) | ۳۶. ظنن (۱) | ۳۷. عرف (۱) | ۳۸. عزز (۱) | ۳۹. علم (۱) | ۴۰. عمل (۱) | ۴۱. غلم (۱) | ۴۲. فتح (۲) |
| ۷. انن (۲) | ۱۹. دخل (۱) | ۳۲. سير (۱) | ۳۳. شطن (۱) | ۳۴. صدق (۲) | ۳۵. ضرر (۱) | ۳۶. ظنن (۱) | ۳۷. عرف (۱) | ۳۸. عزز (۱) | ۳۹. علم (۱) | ۴۰. عمل (۱) | ۴۱. غلم (۱) | ۴۲. فتح (۲) | ۴۳. فتو (۱) |
| ۸. اهل (۴) | ۲۰. دلو (۲) | ۳۳. شطن (۱) | ۳۴. صدق (۲) | ۳۵. ضرر (۱) | ۳۶. ظنن (۱) | ۳۷. عرف (۱) | ۳۸. عزز (۱) | ۳۹. علم (۱) | ۴۰. عمل (۱) | ۴۱. غلم (۱) | ۴۲. فتح (۲) | ۴۳. فتو (۱) | ۴۴. فقی (۱) |
| ۹. ابي (۱) | ۲۱. ذکر (۲) | ۳۴. صدق (۲) | ۳۵. ضرر (۱) | ۳۶. ظنن (۱) | ۳۷. عرف (۱) | ۳۸. عزز (۱) | ۳۹. علم (۱) | ۴۰. عمل (۱) | ۴۱. غلم (۱) | ۴۲. فتح (۲) | ۴۳. فتو (۱) | ۴۴. فقی (۱) | ۴۵. فرح (۱) |
| ۱۰. بشر (۱) | ۲۲. ربب (۲) | ۳۵. ضرر (۱) | ۳۶. ظنن (۱) | ۳۷. عرف (۱) | ۳۸. عزز (۱) | ۳۹. علم (۱) | ۴۰. عمل (۱) | ۴۱. غلم (۱) | ۴۲. فتح (۲) | ۴۳. فتو (۱) | ۴۴. فقی (۱) | ۴۵. فرح (۱) | ۴۶. قبل (۱) |
| ۱۱. بضع (۲) | ۲۳. رجع (۱) | ۳۶. ظنن (۱) | ۳۷. عرف (۱) | ۳۸. عزز (۱) | ۳۹. علم (۱) | ۴۰. عمل (۱) | ۴۱. غلم (۱) | ۴۲. فتح (۲) | ۴۳. فتو (۱) | ۴۴. فقی (۱) | ۴۵. فرح (۱) | ۴۶. قبل (۱) | ۴۷. قلب (۱) |
| ۱۲. بعد (۱) | ۲۴. رحل (۱) | ۳۷. عرف (۱) | ۳۸. عزز (۱) | ۳۹. علم (۱) | ۴۰. عمل (۱) | ۴۱. غلم (۱) | ۴۲. فتح (۲) | ۴۳. فتو (۱) | ۴۴. فقی (۱) | ۴۵. فرح (۱) | ۴۶. قبل (۱) | ۴۷. قلب (۱) | ۴۸. قول (۶) |
| | ۲۵. ردد (۴) | ۳۸. عزز (۱) | ۳۹. علم (۱) | ۴۰. عمل (۱) | ۴۱. غلم (۱) | ۴۲. فتح (۲) | ۴۳. فتو (۱) | ۴۴. فقی (۱) | ۴۵. فرح (۱) | ۴۶. قبل (۱) | ۴۷. قلب (۱) | ۴۸. قول (۶) | ۴۹. کیل (۵) |
| | | ۳۹. علم (۱) | ۴۰. عمل (۱) | ۴۱. غلم (۱) | ۴۲. فتح (۲) | ۴۳. فتو (۱) | ۴۴. فقی (۱) | ۴۵. فرح (۱) | ۴۶. قبل (۱) | ۴۷. قلب (۱) | ۴۸. قول (۶) | ۴۹. کیل (۵) | ۵۰. لبث (۱) |
| | | ۴۰. عمل (۱) | ۴۱. غلم (۱) | ۴۲. فتح (۲) | ۴۳. فتو (۱) | ۴۴. فقی (۱) | ۴۵. فرح (۱) | ۴۶. قبل (۱) | ۴۷. قلب (۱) | ۴۸. قول (۶) | ۴۹. کیل (۵) | ۵۰. لبث (۱) | ۵۱. لعل (۲) |
| | | ۴۱. غلم (۱) | ۴۲. فتح (۲) | ۴۳. فتو (۱) | ۴۴. فقی (۱) | ۴۵. فرح (۱) | ۴۶. قبل (۱) | ۴۷. قلب (۱) | ۴۸. قول (۶) | ۴۹. کیل (۵) | ۵۰. لبث (۱) | ۵۱. لعل (۲) | ۵۲. متع (۲) |
| | | ۴۲. فتح (۲) | ۴۳. فتو (۱) | ۴۴. فقی (۱) | ۴۵. فرح (۱) | ۴۶. قبل (۱) | ۴۷. قلب (۱) | ۴۸. قول (۶) | ۴۹. کیل (۵) | ۵۰. لبث (۱) | ۵۱. لعل (۲) | ۵۲. متع (۲) | ۵۳. مسس (۱) |
| | | ۴۳. فتو (۱) | ۴۴. فقی (۱) | ۴۵. فرح (۱) | ۴۶. قبل (۱) | ۴۷. قلب (۱) | ۴۸. قول (۶) | ۴۹. کیل (۵) | ۵۰. لبث (۱) | ۵۱. لعل (۲) | ۵۲. متع (۲) | ۵۳. مسس (۱) | ۵۴. میر (۲) |
| | | ۴۴. فقی (۱) | ۴۵. فرح (۱) | ۴۶. قبل (۱) | ۴۷. قلب (۱) | ۴۸. قول (۶) | ۴۹. کیل (۵) | ۵۰. لبث (۱) | ۵۱. لعل (۲) | ۵۲. متع (۲) | ۵۳. مسس (۱) | ۵۴. میر (۲) | ۵۵. نجو (۱) |
| | | ۴۵. فرح (۱) | ۴۶. قبل (۱) | ۴۷. قلب (۱) | ۴۸. قول (۶) | ۴۹. کیل (۵) | ۵۰. لبث (۱) | ۵۱. لعل (۲) | ۵۲. متع (۲) | ۵۳. مسس (۱) | ۵۴. میر (۲) | ۵۵. نجو (۱) | ۵۶. نسی (۱) |
| | | ۴۶. قبل (۱) | ۴۷. قلب (۱) | ۴۸. قول (۶) | ۴۹. کیل (۵) | ۵۰. لبث (۱) | ۵۱. لعل (۲) | ۵۲. متع (۲) | ۵۳. مسس (۱) | ۵۴. میر (۲) | ۵۵. نجو (۱) | ۵۶. نسی (۱) | ۵۷. وجد (۲) |
| | | ۴۷. قلب (۱) | ۴۸. قول (۶) | ۴۹. کیل (۵) | ۵۰. لبث (۱) | ۵۱. لعل (۲) | ۵۲. متع (۲) | ۵۳. مسس (۱) | ۵۴. میر (۲) | ۵۵. نجو (۱) | ۵۶. نسی (۱) | ۵۷. وجد (۲) | ۵۸. ورد (۱) |
| | | ۴۸. قول (۶) | ۴۹. کیل (۵) | ۵۰. لبث (۱) | ۵۱. لعل (۲) | ۵۲. متع (۲) | ۵۳. مسس (۱) | ۵۴. میر (۲) | ۵۵. نجو (۱) | ۵۶. نسی (۱) | ۵۷. وجد (۲) | ۵۸. ورد (۱) | ۵۹. وفی (۱) |
| | | ۴۹. کیل (۵) | ۵۰. لبث (۱) | ۵۱. لعل (۲) | ۵۲. متع (۲) | ۵۳. مسس (۱) | ۵۴. میر (۲) | ۵۵. نجو (۱) | ۵۶. نسی (۱) | ۵۷. وجد (۲) | ۵۸. ورد (۱) | ۵۹. وفی (۱) | ۶۰. وله (۲) |
| | | ۵۰. لبث (۱) | ۵۱. لعل (۲) | ۵۲. متع (۲) | ۵۳. مسس (۱) | ۵۴. میر (۲) | ۵۵. نجو (۱) | ۵۶. نسی (۱) | ۵۷. وجد (۲) | ۵۸. ورد (۱) | ۵۹. وفی (۱) | ۶۰. وله (۲) | ۶۱. یسر (۲) |
| | | ۵۱. لعل (۲) | ۵۲. متع (۲) | ۵۳. مسس (۱) | ۵۴. میر (۲) | ۵۵. نجو (۱) | ۵۶. نسی (۱) | ۵۷. وجد (۲) | ۵۸. ورد (۱) | ۵۹. وفی (۱) | ۶۰. وله (۲) | ۶۱. یسر (۲) | ۶۲. یوم (۱) |

فهرست آیات

۱. { یوسف - ۱۹ } وَ جَاءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَى دَلْوَهُ قَالَ يَا بُشْرَى هَذَا غَلَامٌ وَأَسْرُوهُ **بِضَاعَةً** وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ
۲. { یوسف - ۴۲ } وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِي عِنْدَ رَبِّكَ فَأَنَسَاهُ الشَّيْطَانُ ذِكْرَ رَبِّهِ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ **بِضْعَ** سِنِينَ
۳. { یوسف - ۶۲ } وَقَالَ لِفِتْيَانِهِ اجْعَلُوا **بِضَاعَتَهُمْ** فِي رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَا إِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ
۴. { یوسف - ۶۵ } وَلَمَّا فَتَحُوا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا **بِضَاعَتَهُمْ** رُدَّتْ إِلَيْهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مَا نَبْغِي هَذِهِ **بِضَاعَتُنَا** رُدَّتْ إِلَيْنَا وَنَمِيرُ أَهْلَنَا وَنَحْفَظُ أَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيرٍ ذَلِكَ كَيْلٌ يَسِيرٌ
۵. { یوسف - ۶۵ } وَلَمَّا فَتَحُوا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا **بِضَاعَتَهُمْ** رُدَّتْ إِلَيْهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مَا نَبْغِي هَذِهِ **بِضَاعَتُنَا** رُدَّتْ إِلَيْنَا وَنَمِيرُ أَهْلَنَا وَنَحْفَظُ أَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيرٍ ذَلِكَ كَيْلٌ يَسِيرٌ
۶. { یوسف - ۸۸ } فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ مَسَّنَا وَأَهْلْنَا الضَّرُّ وَجِئْنَا **بِبِضَاعَةٍ** مُّزَجَّاجٍ فَأَرُفُ لَنَا الْكَيْلُ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا إِنَّ اللَّهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِينَ
۷. { الروم - ۴ } فِي **بِضْعِ** سِنِينَ لِلَّهِ الْأَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْ بَعْدُ وَيَوْمَئِذٍ يَفْرَحُ الْمُؤْمِنُونَ